

कोसी-मेची नदी जोड़ो परियोजना

प्रलिस के लयः

कोसी-मेची नदी जोड़ो परियोजना, [नदयों को जोड़ने की राष्ट्रीय परपरेकष्य योजना](#), [कोसी नदी](#), [महानंदा नदी](#), [मेची नदी](#) ।

मेन्स के लयः

भारत में नदयों को जोड़ने की योजना और इससे संबंघति मुददे ।

[स्रोतः डाउन टू अर्थ](#)

चरचा में क्यो?

कोसी-मेची नदी जोड़ो परियोजना जो [नदयों को जोड़ने की भारत की महत्त्वकांक्षी राष्ट्रीय परपरेकष्य योजना \(National Perspective Plan-NPP\)](#) का हसिसा है, वविद का वषिय बन गई है । बहिर में [बाढ़](#) पीड़ितों ने इसके करयान्वयन का वरिध कया है ।

- हालाँक इस परयोजना का उददेश्य कषेत्र की सघाई प्रणाली में सुधार लाना है, लेकनि स्थानीय लोगों का तर्क है कयिह परयोजनबाढ़ नयित्रण के महत्त्वपूर्ण मुददे को संबंघति करने में वफिल है, जससे वे हर साल प्रभावति प्रभावति होते हैं ।

कोसी-मेची नदी जोड़ो परयोजना से संबंघति प्रमुख बदि कया हैं?

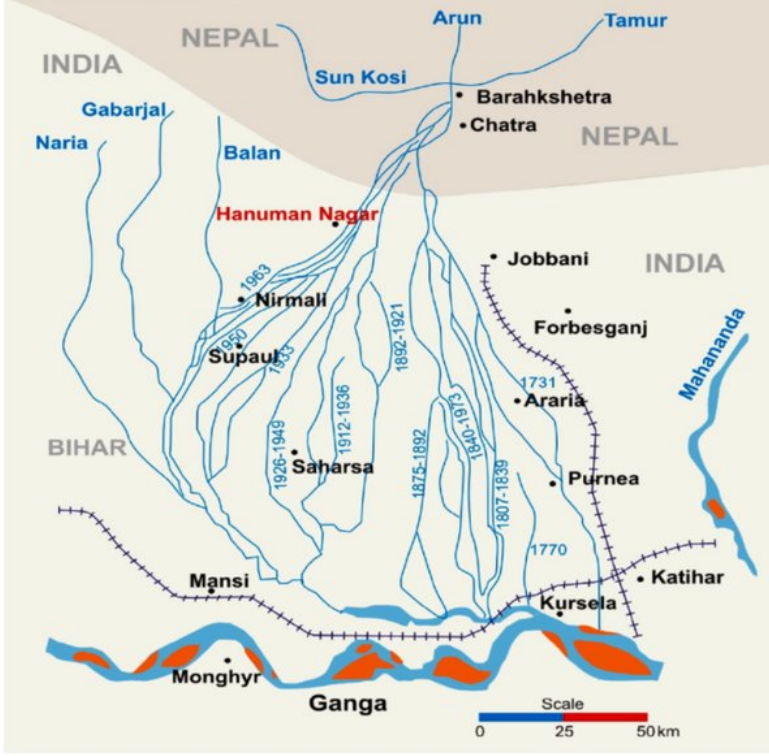
- परयोजना के बारे में: इस परयोजना में [कोसी नदी](#) को महानंदा नदी की सहायक नदी [मेची नदी](#) से जोड़ना शामिल है, जसका प्रभाव बहिर और नेपाल के कषेत्रों पर पड़ेगा ।
 - इस परयोजना का लकष्य 4.74 लाख हेकटेयर (बहिर में 2.99 लाख हेकटेयर) भूमि को वार्षिक सघाई तथा 24 मलियन घन मीटर (Million Cubic Meters- MCM) घरेलू एवं औद्योगिक जलापूरत उपलब्ध कराना है ।
 - परयोजना के पूरा होने पर कोसी बैराज से 5,247 क्यूबिक फीट प्रति सेकंड (क्यूसेक) अतरिकित जल नरिगमति होने की आशा है ।
 - इस परयोजना का प्रबंधन [केंद्रीय जल शक्ति \(जल संसाधन\) मंत्रालय](#) के तहत [राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी \(National Water Development Agency- NWDA\)](#) द्वारा की जा रहा है ।
- **चतियाँ:** यह परयोजना मुख्य रूप से सघाई उददेश्यों की पूरत हेतु तैयार की गई है, जसका लकष्य [खरीफ सीजन](#) के दौरान महानंदा नदी बेसनि में 2,15,000 हेकटेयर कृषि भूमि को सघाई सुवधा प्रदान करना है ।
 - **सरकारी दावों के बावजूद इस परयोजना में बाढ़ नयित्रण का** कोई महत्त्वपूर्ण घटक शामिल नहीं है, जो बाढ़-प्रवण कषेत्र के लयि व्यापक चति का वषिय है ।
 - इस परयोजना में बैराज से केवल 5,247 क्यूबिक फीट प्रति सेकंड (क्यूसेक) अतरिकित जल नरिगमति कया जाएगा, जो बैराज की 9,00,000 क्यूसेक कषमता की तुलना में नगण्य है ।
 - स्थानीय लोगों का मानना है कजिल प्रवाह में मामूली कमी कषेत्र को नुकसान पहुँचाने वाली **वार्षिक बाढ़ को रोकने के लयि परयाप्त नहीं** होगी ।
 - बाढ़ और **भूमिकटाव** के कारण घर नष्ट हो गए हैं और फसलें जलमग्न हो गई हैं, जससे तटबंधों के बीच रहने वाले स्थानीय ग्रामीण तथा उनकी आजीविका प्रभावति हुई है ।
 - परयोजना के तहत सघाई पर केंदरति ध्यान इन तात्कालिक तथा आवरती चुनौतयों का समाधान नहीं करता है ।

कोसी और मेची नदी के संदरभ में मुख्य तथ्य कया हैं?

- **कोसी नदी:** इसे 'बहिर का शोक' कहा जाता है । इसका उदगम हिमालय में समुद्र तल से 7,000 मीटर ऊपर [माउंट एवरेस्ट](#) और कंचनजंगा के

जलग्रहण क्षेत्र से होता है।

- चीन, नेपाल और भारत से होकर बहती हुई यह नदी हनुमान नगर के पास भारत में प्रवेश करती है तथा बिहार के कटहार ज़िले में कुरसेला के पास **गंगा नदी** में मलि जाती है।
- कोसी नदी तीन मुख्य धाराओं **सन कोसी, अरुण कोसी** और **तमूर कोसी** के संगम से बनती है।
 - कोसी नदी **अपने मार्ग को बदलने और पश्चिम की ओर बहने की प्रवृत्ति** के लिये प्रसिद्ध है, जो पछिले 200 वर्षों में दरभंगा, सहरसा और पूर्णिया ज़िलों में कृषि क्षेत्र को नष्ट करते हुए 112 किलोमीटर तक चली गई है।
- **सहायक नदियाँ:** नदी की कई महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं, जिनमें **त्रजिगा, भुतही बलान, कमला बलान और बागमती** शामिल हैं, जो सभी मैदानी इलाकों से होकर कोसी नदी में मलित हैं।



- मेची नदी: यह नेपाल और भारत से होकर बहने वाली एक अंतर-सीमा नदी है। यह महानंदा नदी की एक सहायक नदी है।
 - मेची नदी एक बारहमासी नदी है, जो नेपाल में महाभारत पर्वतमाला में हिमालय की अंतरीय घाटी से निकलती है और फिर बिहार से होकर कश्मिर्गंज ज़िले में महानंदा में मलित है।

महानंदा नदी

- महानंदा नदी पूर्वी हिमालयी नदी तंत्र का एक हिस्सा है। इस नदी में दो धाराएँ शामिल हैं, एक नेपाल में हिमालय से निकलकर बिहार से बहती हुई उत्तर में गंगा से मलित है। स्थानीय रूप से इसका नाम फूलहर है।
 - दूसरी नदी पश्चिम बंगाल के दार्जलिगि से निकलकर बांग्लादेश में प्रवेश करती है, जो बांग्लादेश के गोदागरीघाट के पास गंगा में मलि जाती है। इसे महानंदा के नाम से जाना जाता है।
- **जलग्रहण क्षेत्र:** नेपाल और पश्चिम बंगाल के उप-हिमालयी क्षेत्र में फैला हुआ है, जो भारत में सर्वाधिक वर्षण क्षेत्रों में से एक है।
- **बाढ़:** मानसून के चरम महीनों के दौरान प्रायः नदियाँ आपस में मलि जाती हैं, जिससे बिहार और पश्चिम बंगाल में भारी बाढ़ आ जाती है। जब गंगा अपने चरम पर होती है तो बाढ़ की समस्या और भी बढ़ जाती है, जिससे बिहार में पूर्णिया व कटहार तथा पश्चिम बंगाल में दार्जलिगि, पश्चिमी दूनाजपुर व मालदा जैसे प्रभावित ज़िलों में व्यापक जलभराव हो जाता है।

नदियों को जोड़ने की राष्ट्रीय परियोजना (NPP) क्या है?

- **योजना के बारे में:** NPP को वर्ष 1980 में सचिवाई मंत्रालय (अब जल शक्ति मंत्रालय) द्वारा जल के अंतर-बेसिन हस्तांतरण के माध्यम से जल संसाधनों को विकसित करने हेतु तैयार किया गया था।
- **घटक:** योजना को दो मुख्य घटकों में विभाजित किया गया है: **हिमालयी नदी विकास घटक और प्रायद्वीपीय नदी विकास घटक।**
- **चिह्नित परियोजनाएँ:** नदियों को जोड़ने से संबंधित 30 परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है, जिनमें से 16 परियोजनाएँ प्रायद्वीपीय घटक के अंतर्गत

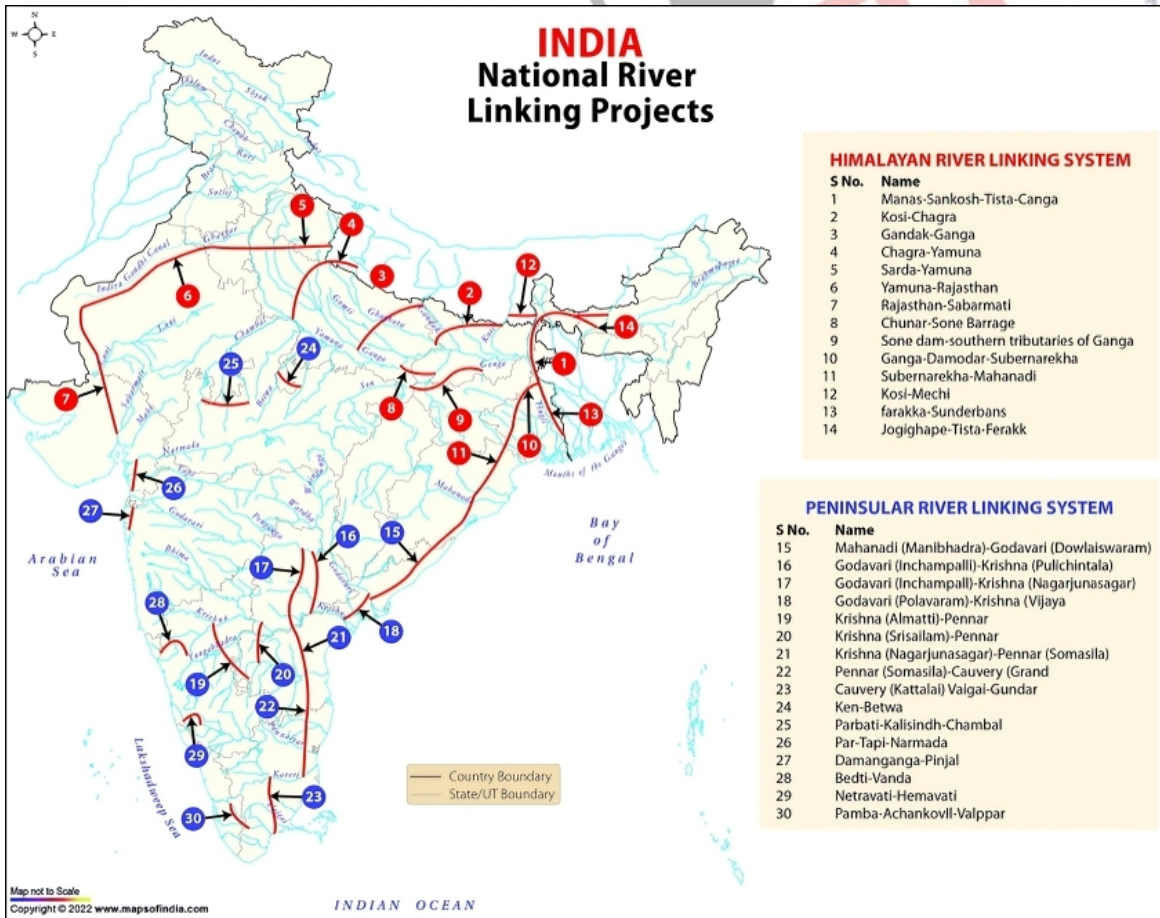
तथा 14 हिमालयी घटक के अंतर्गत आती हैं।

- **प्रायद्वीपीय घटक के अंतर्गत प्रमुख परियोजनाएँ:** महानदी-गोदावरी लकि, गोदावरी-कृष्णा लकि, पार-तापी-नर्मदा लकि और **केन-बेतवा लकि** (NPP के तहत कार्यान्वयन शुरू करने वाली पहली परियोजना)।
- **हिमालयी घटक के तहत प्रमुख परियोजनाएँ:** कोसी-घाघरा लकि, गंगा (फरकका)-दामोदर-सुवर्णरेखा लकि और कोसी-मेची लकि।
- **महत्त्व:** NPP का उद्देश्य गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना बेसिन में बाढ़ के जोखिम का प्रबंधन करना है।

- इसका उद्देश्य राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे पश्चिमी एवं प्रायद्वीपीय राज्यों में **जल की कमी को दूर करना है।**
- इस योजना का उद्देश्य **जल की कमी वाले क्षेत्रों में संचाई प्रणाली में सुधार करना**, कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देना, खाद्य सुरक्षा को प्रोत्साहित करना तथा कृषि क्षेत्रों की आय को संभवतः दोगुना करना है।
 - इससे पर्यावरण अनुकूल **अंतरदेशीय जलमार्गों** के माध्यम से माल ढुलाई के लिये आधारिक संरचनाओं का विकास सुगम होगा।
- NPP को **सतही जल का उपयोग करने के उद्देश्य से परकिलपति किया गया है** ताकि **भूजल में हो रही कमी** को रोका जा सके तथा समुद्र में प्रवाहित होने वाले स्वच्छ/मीठे/ताज़े जल (Fresh Water) की मात्रा को कम किया जा सके।

- **चुनौतियाँ:** आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिक प्रभावों का आकलन करने वाले व्यापक व्यवहार्यता अध्ययन प्रायः अधूरे होते हैं या उनमें कमियाँ होती हैं।

- अपर्याप्त डेटा से परियोजना की प्रभावशीलता और संभावित अनपेक्षित परिणामों के बारे में अनिश्चितताएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- जल राज्य-सूची का विषय है। इसलिये **राज्यों के बीच जल साझाकरण पर समझौते जटिल हो जाते हैं। यह स्थिति संभावित विवादों को जनम देती है।** उदाहरण के लिये, केरल और तमिलनाडु के बीच जल साझाकरण से संबंधित मुद्दे।
- बड़े पैमाने पर जल स्थानांतरण से **बाढ़ की स्थिति और भी बिकट हो सकती है।** यह स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को क्षति पहुँचा सकता है। इसके अतिरिक्त **जल प्रवाह में परिवर्तन से जलभराव की स्थिति** उत्पन्न हो सकती तथा कृषि भूमि में लवणता बढ़ सकती है, जिससे मृदा की गुणवत्ता एवं फसल की पैदावार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- बाँधों, नहरों और संबंधित आधारभूत ढाँचे के निर्माण, रख-रखाव एवं संचालन हेतु व्यापक वित्तीय परियोजनाएँ एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक बोझ प्रस्तुत करता है।
- **जलवायु परिवर्तन से** वर्षण प्रारूप में बदलाव आ सकता है, जिससे जल की उपलब्धता एवं वितरण दोनों प्रभावित हो सकते हैं, साथ ही नदियों को जोड़ने की परियोजनाओं के अपेक्षित लाभ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।



आगे की राह

- **बाढ़ के मैदानों को क्षेत्रीकरण करने**, उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण अवसंरचना और बस्तियों को प्रतबंधित करने के लिये एक व्यापक

योजना वकिसति की जानी चाहिये। नरिदषिट कषेत्रों में बाढ प्रतरिधी आवास और फसल पैटर्न को प्रोत्साहति करने की आवश्यकता है।

◦ कोसी नदी के कनारे तटबंधों को सुदृढ बनाने में नविश करने की आवश्यकता है ताकट्ट-फूट को रोका जा सके और जलभराव को कम कयिा जा सके।

■ परयिोजना लाभों के न्यायसंगत वतिरण को सुनशिचति करने के लयि एक स्पष्ट तंत्र वकिसति कयिा जाना चाहिये। बाढ-ग्रस्त कषेत्रों में बाढ नयित्रण उपायों में महत्त्वपूर्ण नविश होना चाहिये जबकजिल की कमी वाले कषेत्रों को बेहतर सचिाई अवसंरचना से लाभ होना चाहिये।

■ नदयिों को जोड़ने की योजना के सामने आने वाली चुनौतयिों को देखते हुएराष्ट्रीय जलमार्ग परयिोजना (NWP) को अपनाा एक आशाजनक वकिल्प प्रदान करता है।

◦ NWP जल बंटवारे पर राज्य के जल-साझाकरण वविादों को रोकती है और सामान्य रूप से समुद्र में बहने वाले अतरिकित बाढ के जल का उपयोग करके कृषि और वदियुत ऊर्जा उत्पादन के लयि अधिक लागत प्रभावी समाधान प्रदान करती है।

????? ???? ????:

प्रश्न: कोसी-मेची नदी जोड़ो परयिोजना के उद्देश्यों और अपेक्षति लाभों पर चर्चा कीजयि। यह नदयिों को जोड़ने के लयि राष्ट्रीय परपिरेकष्य योजना के व्यापक लक्ष्यों के साथ कसि प्रकार संरेखति है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

?????

प्रश्न. नदयिों को आपस में जोड़ना सूखा, बाढ और बाधति जल-परविहन जैसी बहु-आयामी अंतरसंबंधति समस्याओं का व्यवहार्य समाधान दे सकता है। आलोचनात्मक परीक्षण कीजयि। (2020)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/kosi-mechi-river-linking-project>

